सत्र 2021–22
स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
एम. ए. अंतिम वर्ष
प्रथम प्रश्नपत्र
संगीत का इतिहास

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	**36**

समयः 3 घंटा

इकाई 1

1. मार्ग तथा देशी एवं उत्तर भारतीय तथा कर्नाटक ताल पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. उपशास्त्रीय तथा सुगम संगीत में प्रयुक्त तालों के विकास का अध्ययन।

इकाई 2

1. संगीत शिक्षण की प्राचीन परम्परा तथा विकास का ऐतिहासिक अध्ययन। संस्थागत शिक्षण प्रणाली का ऐतिहासिक अध्ययन।
2. गुरू शिष्य परंपरा एवं संस्थागत शिक्षण प्रणाली के गुण दोश।

इकाई 3

1. छन्द की परिभाषा तथा छन्दो और तालों के पारस्परिक संबंध का ज्ञान। बंदिशों के संदर्भ मे छन्दों का महत्व।
2. रस–भाव एवं लय–बोल का संबंध।

इकाई 4

1. वाद्य वर्गीकरण का प्राचीन सिद्धांत तथा आधुनिक युग मे परिवर्तन।
2. भारतीय अवनद्ध वाद्यों के ऐतिहासिक विकास का उनकी बनावट, वादन तकनीक और नादात्मक के आधार पर विश्लेषणात्मक अध्ययन।

इकाई 5

1. तबला के विभिन्न घरानों की उप्पत्ति का वादन भौली के आधार पर वि” लेशण।
2. निम्नलिखित कलाकारों की वादन विशेषताओं का अध्ययन।

उस्ताद अहमद जान, थिरकवा, उस्ताद अल्लारखा, पं. सामता प्रसाद, पं. किशन महाराज।

सत्र 2021–22
स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
एम. ए. अंतिम वर्ष
द्वितीय प्रश्नपत्र
संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समयः 3 घंटा

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	36

इकाई–1

1. त्रिताल मे हर मात्रा से उठकर बत्तीस तिहाइयों के चक्र का अध्ययन तथा त्रिताल में हर मात्रा से नौहक्का तिहाइयां बनाने का अभ्यास।
2. गायन, वादन एवं कत्थक नृत्य के साथ तबला संगति के सिद्धांत तथा उनका वि" लेशणात्मक अध्ययन।

इकाई–2

1. पा" चात्य संगीत के स्टाफ नोटे" ान पद्धति का विस्तृत अध्ययन और उत्तर भारतीय तालों को उस लिपि में लिखने का ज्ञान।
2. निम्नलिखित पा" चात्य अवनद्ध वाद्यों का अध्ययनः कोटल ड्रम, टेनर ड्रम, बास ड्रम, स्नेअर ड्रम।

इकाई–3

1. एकल तबला वादन के संदर्भ मे ताल का चयन, सामग्री चयन, बंदि" ाों का क्रम, नगमा (लहरा) का महत्व।
2. एक सुन्दर एवं सफल सांगीतिक प्रस्तुति में मंच, मंच सज्जा, ध्वनि एवं प्रका" ा व्यवस्था, रंग भूशा एवं वे" ाभूशा का महत्व।

इकाई–4

1. संगीत संबंधी किसी विषय पर निबन्ध लेखन (न्यूनतम 800 शब्दों में)
2. दिये गये बोलों के आधार पर निर्दे" ाानुसार त्रिताल, झपताल, रूपक, एकताल, आड़ाचौताल, सवारी, वसंत, शिखर रूद्र, तालों में विभिन्न रचनायें बनाकरताललिपि में लिखना।

इकाई–5

1. किसी ताल के ठेके को किसी अन्य ताल में सम से सम तक समायोजित कर ताललिपि मे लिखने का ज्ञान तथा पाठ्यक्रम के तालों को विभिन्न लयकारियों में लिखना।

2. निम्नलिखित अप्रचलित तालों को ठाह, दुगुन एवं चौगुन में ताल वर्णन सहित लिपिबद्ध करने का अभ्यास।
धु्रव (13 मात्रा), जयमंगल (13 मात्रा), यति" ोखर (15 मात्रा) एवं अर्जुन (20 मात्रा)

सत्र 2021–22

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु

एम. ए. अंतिम वर्ष

क्रियात्मक : मौखिक एवं प्रदर्शन

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	36

पिछले पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति।

1. निम्नलिखित मात्रा की तालों में लहरे के साथ सम्पूर्ण एकल वादन :–
   9 मात्रा, जय ताल 13 मात्रा, ि" ाखर 17 मात्रा।
2. आड़ा चौताल एवं एकताल में लहरे के साथ सम्पूर्ण एकल वादन।
3. त्रिताल में विभिन्न घरानों की वि" ोशताओं एवं तिस्त्र, मिश्र व खण्ड जाति की रचनाओं सहित सम्पूर्ण सर्वांग एकल वादन करने की क्षमता।
4. त्रिताल, एकताल, झपताल तथा रूपक में किसी नि" चत बोल को विभिन्न लयकारियों के द्वारा प्रस्तुत करने का अभ्यास।
5. त्रिताल में हर मात्रा से उठने वाली विभिन्न तिहाइयों को पढ़ना तथा उन्हें तबले पर बजाने की योग्यता।
6. पाठ्यक्रम के सभी तालों में हाथ से ताली देकर विभिन्न बदि" ाों की पढ़न्त करना।
7. नृत्य के आमद, परन, तत्कार एवं छन्दों की पढ़न्त एवं उन्हें तबले पर बजाना।
8. कथक नृत्य संगति का अभ्यास।
9. निम्नलिखित अप्रचलित तालों में स किन्हीं दो तालों की ठाह, दुगुन एवं चौगुन में पढन्त का अभ्यास।
   धु्रव (13 मात्रा), जयमंगल (13 मात्रा), यति" ोखर (15 मात्रा) एवं अर्जुन (20 मात्रा)

एम. ए. अंतिम वर्ष

क्रियात्मक : मंच प्रदर्शन

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	36

1. आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष एकल तबला वादनः–
   अ– विद्यार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यकम में से अपनी इच्छानुसार किसी एक ताल मे
   संपूर्ण एकल वादन की प्रस्तुति। (अधिकतम 30 मिनिट)

ब– किसी अन्य ताल में परीक्षक के निर्दे” ाानुसार संपूर्ण एकल वादन (15 मिनिट)

2. गायन, वादन की संगति में पूर्ण निपुणता एवं कथक नृत्य के साथ संगति करने की योग्यता।
3. तबला मिलाने का पूर्ण ज्ञान।

:संदर्भ सूची:

1.	ताल परिचय भाग 3	– पं. गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव
2.	पखावज एवं तबला के घराने एवं परम्पराएँ	– डॉ. अबान मिस्त्री
3.	ताल वाद्य शास्त्र	– डॉ. एम. बी. मराठे
4.	भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन	– डॉ. अरूण कुमार सेन
5.	ताल वाद्य परिचय	– डॉ. जमुना प्रसाद पटेल
6.	ताल वाद्यों की आवश्यकता एवं उपायेगिता	– डॉ. चित्रा गुप्ता
7.	तबले का उद्गम विकास एवं वादन भौलियॉ	– डॉ. योगमाया भुक्ला
8.	ताल कोश	– पं. गिरी” ाचन्द्र श्रीवास्तव